रंगीन
चित्रों सहित

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

(सरल हिन्दी भाषा में)

पूजन विधि, पूजन सामग्री
एवं आरती सहित

सामग्री

केले के खम्भे, पंच पल्लव, कलश, पंचरत्न, चावल, कपूर, धूप, पुष्पों की माला, श्रीफल, ऋतुफल, अंग वस्त्र, नैवेद्य, कलावा, आम के पत्ते, यज्ञोपवीत, वस्त्र, गुलाब के फूल, दीप, तुलसी दल, पान, पंचामृत (दूध दही, घृत, शहद, शक्कर), केसर, वन्दनवार, चौकी।

पूजा विधि

व्रत करने वाला पूर्णिमा व संक्रान्ति के दिन सायंकाल को स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा-स्थान में आसन पर बैठकर श्रद्धापूर्वक श्री गणेश, गौरी, वरुण, विष्णु आदि सब देवताओं का ध्यान करके पूजन करे। संकल्प करे कि मैं सत्यनारायण स्वामी का पूजन तथा कथा-श्रवण सदैव करूँगा। पुष्प हाथ में लेकर नारायण का ध्यान करे। यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, नैवेद्य आदि से युक्त होकर स्तुति करें- हे भगवान! मैंने श्रद्धापूर्वक फल, जल आदि सब सामग्री आपके अर्पण की है। इसे स्वीकार कीजिए। मेरा आपको बारम्बार नमस्कार है। इसके बाद सत्यनारायण जी की कथा पढ़े अथवा श्रवण करे।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

पहला अध्याय

एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में शौनकादि अट्ठासी हज़ार ऋषियों ने श्रीसूतजी से पूछा- हे प्रभु! इस कलयुग में वेद-विद्या रहित मनुष्यों को प्रभु भक्ति किस प्रकार मिलेगी तथा उनका उद्धार कैसे होगा ? इसलिए हे मुनिश्रेष्ठ! कोई ऐसा तप कहिए, जिससे थोड़े समय में पुण्य प्राप्त हों तथा मनवांछित फल मिले। वह कथा सुनने की हमारी इच्छा है। सर्वशास्त्रज्ञाता श्रीसूतजी बोले- हे वैष्णवों में पूज्य! आप सब ने प्राणियों के हित की बात पूछी है। अब मैं उस श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों से कहूँगा, जिस व्रत को नारदजी ने लक्ष्मीनारायण से पूछा था और लक्ष्मीपति ने मुनिश्रेष्ठ नारदजी से कहा था। सो ध्यान से सुनो—

एक समय योगीराज नारदजी दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुए मृत्युलोक में आ पहुँचे। यहाँ अनेक योनियों में जन्मे हुए प्राय: सभी मनुष्यों को अपने कर्मों द्वारा अनेकों दुखों से पीड़ित देखकर सोचा किस यत्न के करने से निश्चय ही प्राणियों के दुखों का नाश हो सकेगा ? ऐसा मन में सोचकर विष्णुलोक को गए। वहाँ श्वेत वर्ण और चार भुजाओं वाले देवों के ईश नारायण को देखकर, जिनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म थे तथा वरमाला पहने हुए थे,

स्तुति करने लगे- हे भगवान! आप अत्यन्त शक्ति से सम्पन्न हैं। मन तथा वाणी भी आपको नहीं पा सकती। आपका आदि-मध्य-अन्त नहीं है। निर्गुण स्वरूप, सृष्टि के आदि भूत व भक्तों के दुखों को नष्ट करने वाले हो। आपको मेरा नमस्कार है। नारदजी से इस प्रकार की स्तुति सुनकर विष्णु भगवान बोले- हे मुनिश्रेष्ठ! आपके मन में क्या है ? आपका किस काम के लिए आगमन हुआ है ? नि:संकोच कहो। तब नारदमुनि बोले- मृत्युलोक में सब मनुष्य जो अनेक योनियों में पैदा हुए हैं, अपने-अपने कर्मों के द्वारा अनेक प्रकार के दुखों से दुखी हो रहे हैं। हे नाथ! मुझ पर दया रखते हुए बताइये कि उन मनुष्यों के सब दु:ख थोड़े से ही प्रयत्न से कैसे दूर हो सकते हैं ? हे नारद! मनुष्यों की भलाई के लिए तुमने बहुत अच्छी बात पूछी है। जिस काम के करने से मनुष्य मोह से छूट जाता है, वह मैं कहता हूँ। सुनो- बहुत पुण्य देने वाला स्वर्ग तथा मृत्युलोक दोनों में दुर्लभ एक उत्तम व्रत है। आज मैं प्रेमवश होकर तुमसे कहता हूँ। सत्यनारायण का यह व्रत अच्छी तरह विधिपूर्वक करके मनुष्य आयुपर्यंत यहाँ सुख भोगकर मरने पर मोक्ष को प्राप्त होता है।

श्री भगवान के वचन सुनकर नारदमुनि बोले- उस व्रत का फल क्या है ? क्या विधान है और किसने यह व्रत किया है और किस दिन यह व्रत करना चाहिए ? विस्तार से बताइए। भगवान बोले- दु:ख, शोक आदि को दूर करने वाला, धन-धान्य को बढ़ाने वाला, सौभाग्य तथा सन्तान को देने वाला यह व्रत सब स्थानों पर विजयी करने वाला है। भक्ति और श्रद्धा के साथ किसी भी दिन मनुष्य शाम के समय ब्राह्मणों और बंधुओं के साथ श्री सत्यनारायण की धर्मपरायण होकर

पूजा करे। भक्ति भाव से नैवेद्य, केले का फल, घी, दूध और गेहूँ का चूर्ण सवाया ले। गेहूँ के अभाव में साठी का चूर्ण, शक्कर तथा गुड़ लें और सब भक्षण योग्य पदार्थ जमा करके भगवान के अर्पण कर दें तथा बंधुओं सहित ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। उसके बाद स्वयं भोजन करें। नृत्य, गीत आदि का आचरण कर सत्यनारायण भगवान का स्मरण करते हुए समय व्यतीत करें। इस तरह व्रत करने पर मनुष्यों की इच्छा निश्चय पूरी होती है। विशेषकर कलि-काल में भूमि पर यही मोक्ष का सरल उपाय है।

❋❋❋

दूसरा अध्याय

सूतजी बोले- हे ऋषियों! जिसने पहले समय में इस व्रत को किया है, उसका इतिहास कहता हूँ, ध्यान से सुनो। सुन्दर काशीपुरी नगरी में एक अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख और प्यास से बेचैन हुआ नित्य पृथ्वी पर घूमता था। ब्राह्मणों से प्रेम करने वाले भगवान ने ब्राह्मण को दुःखी देखकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धर उसके पास जा आदर के साथ पूछा- हे विप्र! नित्य दुःखी हुआ पृथ्वी पर क्यों घूमता है ? हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब मुझसे कहो। मैं सुनना चाहता हूँ। ब्राह्मण बोला- मैं निर्धन ब्राह्मण हूँ। भिक्षा के लिए पृथ्वी पर घूमता हूँ। हे भगवान! यदि आप इसका उपाय जानते हों तो कृपा कर कहो। वृद्ध ब्राह्मण बोला- सत्यनारायण भगवान मनवांछित फल देने वाले

हैं। इसलिए हे ब्राह्मण! तू उनका पूजन कर, जिसके करने से मनुष्य सब दुःखों से मुक्त होता है। ब्राह्मण को व्रत का विधान बताकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले सत्यनारायण भगवान अंतर्ध्यान हो गए। जिस व्रत को वृद्ध ब्राह्मण ने बताया है मैं उसको करूँगा। यह निश्चय करने पर उसे रात में नींद भी नहीं आई। वह सवेरे उठ सत्यनारायण के व्रत का निश्चय कर भिक्षा के लिए चला। उस दिन उसको भिक्षा में बहुत धन मिला। जिससे बंधु-बाँधवों के साथ उसने सत्यनारायण का व्रत किया। इसके करने से वह ब्राह्मण सब दुःखों से छूटकर अनेक प्रकार की संपत्तियों से युक्त हुआ। उस समय से वह ब्राह्मण हर मास व्रत करने लगा। इस तरह सत्यनारायण भगवान के व्रत को जो करेगा, वह सब पापों से छूटकर मोक्ष को प्राप्त होगा। आगे जो पृथ्वी पर सत्यनारायण का व्रत करेगा वह मनुष्य सब दुःखों से छूट जाएगा। इस तरह नारदजी ने नारायण का कहा हुआ यह व्रत मैंने तुमसे कहा। हे विप्रो! मैं अब और क्या कहूँ ? ऋषि बोले- हे मुनिश्वर! संसार में इस ब्राह्मण से सुनकर किस-किसने इस व्रत को किया ? हम सब वह सुनना चाहते हैं। इसके लिए हमारे मन में श्रद्धा है। सूतजी बोले- हे मुनियों! जिस-जिस ने इस व्रत को किया है वह सब सुनो—

एक समय एक ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार बंधु-बांधवों के साथ व्रत करने को तैयार हुआ। उसी समय एक लकड़ी बेचने वाला बूढ़ा आदमी आया और बाहर लकड़ियों को रखकर ब्राह्मण के मकान में गया। प्यास से दुःखी लकड़हारा उनको व्रत करते देखकर ब्राह्मण को

नमस्कार कर कहने लगा- आप यह क्या कर रहे हैं ? और इसके करने से क्या फल मिलता है ? कृपा करके मुझसे कहो। ब्राह्मण ने कहा- सब मनोकामनाओं को पूरा करने वाला यह सत्यनारायण भगवान का व्रत है। इसकी ही कृपा से मेरे यहाँ धन-धान्य आदि की वृद्धि हुई है। ब्राह्मण से इस व्रत के बारे में जानकर लकड़हारा बहुत प्रसन्न हुआ। चरणामृत ले और प्रसाद खाने के बाद अपने घर को गया। लकड़हारे ने अपने मन में इस प्रकार का संकल्प किया कि आज गाँव में लकड़ी बेचने से जो धन मिलेगा उसी से सत्यनारायण देव का उत्तम व्रत करूँगा। यह मन में विचार कर वह बूढ़ा आदमी लकड़ियाँ अपने सिर पर रखकर जिस नगर में धनवान लोग रहते थे वहाँ गया। उस रोज़ वहाँ पर उसे उन लकड़ियों का दाम पहले दिनों से चौगुना मिला। तब वह बूढ़ा लकड़हारा दाम ले और अति प्रसन्न हो पक्के केले की फली, शक्कर, घी, दुग्ध, दही और गेहूँ का चून इत्यादि सत्यनारायण भगवान के व्रत की कुल सामग्रियों को लेकर अपने घर गया। फिर उसने अपने भाइयों को बुलाकर विधि के साथ भगवानजी का पूजन और व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से वह बूढ़ा लकड़हारा धन, पुत्र आदि से युक्त हुआ और संसार के समस्त सुख भोगकर बैकुण्ठ को चला गया।

❋❋❋

तीसरा अध्याय

सूतजी बोले- हे श्रेष्ठ मुनियों! अब आगे की कथा कहता हूँ, सुनो- पहले समय में उल्कामुख नाम का एक बुद्धिमान राजा था। वह सत्यवक्ता और जितेन्द्रिय था। प्रतिदिन देव स्थानों पर जाता तथा गरीबों को धन देकर उनके कष्ट दूर करता था। उसकी पत्नी कमल के समान मुख वाली और सती साध्वी थी। भद्रशीला नदी के तट पर उन दोनों ने श्री सत्यनारायण का व्रत किया। उस समय में वहाँ एक साधु वैश्य आया। उसके पास व्यापार के लिए बहुत-सा धन था। वह नाव को किनारे पर ठहरा कर राजा के पास आ गया और राजा को व्रत करते हुए देखकर विनय के साथ पूछने लगा- हे राजन्! भक्तियुक्त चित्त से यह आप क्या कर रहे हैं ? मेरी सुनने की इच्छा है। सो आप यह मुझे बताइए।

राजा बोला- हे साधु! अपने बांधवों के साथ पुत्रादि की प्राप्ति के लिए महाशक्तिवान सत्यनारायण भगवान का व्रत व पूजन किया जा रहा है। राजा के वचन सुनकर साधु आदर से बोला- हे राजन्! मुझसे इसका सारा विधान कहो। मैं भी आपके कथानुसार इस व्रत को करूँगा। मेरे भी कोई संतान नहीं है और इससे निश्चय ही होगी। राजा से सब विधान सुनकर व्यापार से निवृत हो वह आन्नद के साथ घर गया। साधु ने अपनी पत्नी से संतान देने वाले उस व्रत का समाचार सुनाया और कहा कि जब मेरे संतान होगी तब मैं इस व्रत को करूँगा।

एक दिन उसकी पत्नी लीलावती पति के साथ आनन्दित हो सांसारिक धर्म में प्रवृत्त होकर सत्यनारायण भगवान की कृपा से गर्भवती हो गई तथा दसवें महीने में उसके एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ। दिनों-दिन वह इस तरह बढ़ने लगी जैसे शुक्लपक्ष का चन्द्रमा बढ़ता है। कन्या का नाम कलावती रखा गया। तब लीलावती ने अपने पति से कहा- आपने संकल्प किया था कि भगवान का व्रत करूँगा। अब आप उसे करिए। साधू बोला- हे प्रिये! इसके विवाह पर करूँगा। इस प्रकार अपनी पत्नी को आश्वासन दे वह नगर को गया। कलावती पितृ-गृह में वृद्धि को प्राप्त हो गई। साधु ने जब नगर में सखियों के साथ अपनी पुत्री को देखा तो तुरन्त दूत बुलाकर कहा- पुत्री के लिए कोई सुयोग्य वर देखकर लाओ।

साधु की आज्ञा पाकर दूत कंचन नगर पहुँचा और वहाँ पर खोज और देखभाल कर लड़की के लिए सुयोग्य वणिक पुत्र को ले आया। उस सुयोग्य लड़के को देखकर साधु ने अपने बंधु-बांधवों सहित प्रसन्नचित अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया। किन्तु दुर्भाग्य से विवाह के समय भी उस व्रत को करना भूल गया। तब श्री भगवान क्रोधित हो गए और श्राप दिया कि तुम्हें दारूण दुःख प्राप्त होगा। अपने कार्य में कुशल साधु बनिया जमाता सहित समुद्र स्थित रत्नपुर नगर में गया और वहाँ दोनों ससुर-जमाई चन्द्रकेतु राजा के उस नगर में व्यापार करने लगे। एक रोज़ भगवान सत्यनारायण की माया से प्रेरित कोई चोर राजा का धन चुराकर भागा जा रहा था। किन्तु राजा के दूतों को आता देखकर चोर ने घबराकर भागते हुए राजा के धन को वहीं चुपचाप रख

दिया जहाँ वो ससुर-जमाई ठहरे हुए थे। जब दूतों ने उस साधु वैश्य के पास राजा के धन को रखा देखा तो वे दोनों को बाँधकर ले गए और राजा से बोले- यह दो चोर हम पकड़ लाए हैं। तब राजा की आज्ञा से उनको कठोर कारावास में डाल दिया और उनका सारा धन छीन लिया। सत्यनारायण भगवान के श्राप द्वारा उनकी पत्नी भी घर पर बहुत दुःखी हुई। उनके घर पर जो धन रखा था उसे चोर चुराकर ले गए। शारीरिक व मानसिक पीड़ा तथा भूख-प्यास से अति दुखित हो अन्न की चिन्ता में कलावती एक ब्राह्मण के घर गई। वहाँ उसने सत्यनारायण भगवान का व्रत होते देखा, फिर कथा सुनी तथा प्रसाद ग्रहण कर रात को घर आई।

माता ने कलावती से कहा- हे पुत्री! अब तक कहाँ रही ? कलावती बोली- हे माता! मैंने एक ब्राह्मण के घर श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत देखा है। कन्या के वचन सुनकर लीलावती भगवान के पूजन की तैयारी करने लगी। लीलावती ने परिवार और बंधुओं सहित श्री सत्यनारायण भगवान का पूजन किया और वर माँगा कि मेरे पति और दामाद शीघ्र आ जाएँ। साथ ही प्रार्थना की- हम सबका अपराध क्षमा करो। सत्यनारायण भगवान इस व्रत से सन्तुष्ट हो गए और राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दर्शन देकर कहा- हे राजन्! दोनों वैश्यों को प्रातः ही छोड़ दो और सारा धन जो तुमने ग्रहण किया है उन्हें दे दो। नहीं तो मैं तुम्हारा धन, राज्य, पुत्रादि सब नष्ट कर दूँगा। राजा से ऐसे वचन कहकर भगवान अन्तर्ध्यान हो गए।

प्रातःकाल राजा चन्द्रकेतु ने सभा में अपना स्वप्न सुनाया, फिर दोनों वणिक पुत्रों को कैद से मुक्त कर सभा में बुलाया। दोनों ने आते ही राजा को नमस्कार किया। राजा मीठे वचनों से बोला- हे महानुभावों! भाग्यवश ऐसा दुःख प्राप्त हुआ है। अब तुम्हें कोई भय नहीं। ऐसा कहकर राजा ने उनको नए-नए वस्त्राभूषण पहनाए तथा उनका जितना धन लिया था उससे दुगुना धन देकर आदर-सत्कार सहित विदा किया। दोनों वैश्य अपने घर को चल दिए।

❋❋❋

चौथा अध्याय

सूतजी बोले- वैश्य ने मंगलाचार करके यात्रा आरम्भ की और अपने नगर को चला। उनके थोड़ी दूर निकलने पर दण्डी वेषधारी सत्यनारायण भगवान ने उनसे पूछा- हे साधु! तेरी नाव में क्या है ? अभिमानी वणिक हँसता हुआ बोला- हे दण्डी! आप क्यों पूछते हो ? क्या धन लेने की इच्छा है ? मेरी नाव में तो बेल और पत्ते भरे हैं। वैश्य का कठोर वचन सुनकर भगवान ने कहा- तुम्हारा वचन सत्य हो। दण्डी ऐसा कहकर वहाँ से दूर चले गए और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे बैठ गए। दण्डी के जाने पर वैश्य ने नित्यक्रिया करने के बाद नाव को ऊँची उठी देखकर अचम्भा किया और नाव में बेल-पत्ते आदि देखकर मूर्छित हो ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर मूर्छा खुलने पर अत्यंत शोक प्रकट करने लगा। तब उसका दामाद बोला कि आप शोक न करें। यह

दण्डी का श्राप है। अतः उनकी शरण में चलना चाहिए। तभी हमारी मनोकामना पूरी होगी। दामाद के वचन सुनकर वह दण्डी के पास पहुँचा और अत्यन्त भक्तिभाव से नमस्कार करके बोला- मैंने जो आपसे असत्य वचन कहे थे उनको क्षमा करो। ऐसा कहकर महान शोकातुर हो रोने लगा। तब दण्डी भगवान बोले- हे वणिक पुत्र! मेरी आज्ञा से तुम्हें बार-बार दुःख प्राप्त हुआ है। तू मेरी पूजा से विमुख हुआ। साधु बोला- हे भगवान्! आपकी माया से मोहित ब्रह्मा आदि भी आपके रूप को नहीं जानते। तब मैं अज्ञानी कैसे जान सकता हूँ ? आप प्रसन्न होइए। मैं सामर्थ्य के अनुसार आपकी पूजा करूँगा। मेरी रक्षा करो और पहले के समान नौका में धन भर दो। उसके भक्तियुक्त वचन सुनकर भगवान प्रसन्न हो उसकी इच्छानुसार वर देकर अन्तर्ध्यान हो गए। तब उन्होंने नाव पर आकर देखा कि नाव धन से परिपूर्ण है। फिर वह भगवान सत्यनारायण का पूजन कर साथियों सहित अपने नगर को चला।

जब अपने नगर के निकट पहुँचा तब दूत को घर भेजा। दूत ने साधु के घर जा उसकी पत्नी को नमस्कार कर कहा कि साधु अपने दामाद सहित इस नगर के समीप आ गए हैं। ऐसा सुनकर साधु की पत्नी ने बड़े हर्ष के साथ सत्यदेव का पूजन कर पुत्री से कहा- मैं अपने पति के दर्शन को जाती हूँ। तू कार्य पूर्ण कर शीघ्र आ। माता के ऐसे वचन सुनकर कलावती प्रसाद छोड़कर पति के पास गई। प्रसाद की अवज्ञा के कारण सत्यदेव ने रूष्ट हो उसके पति को नाव सहित पानी में डुबो दिया। कलावती अपने पति को न देखकर रोती हुई ज़मीन पर गिर गई। इस तरह नौका को डूबा

हुआ तथा कन्या को रोता देख साधु दुःखी हो बोला- हे प्रभु! मुझसे या मेरे परिवार से जो भूल हुई है उसे क्षमा करो। उसके दीन वचन सुनकर सत्यदेव प्रसन्न हो गए और आकाशवाणी हुई- हे साधु! तेरी कन्या मेरे प्रसाद को छोड़कर आई है। इसलिए इसका पति अदृश्य हुआ है। यदि वह घर जाकर प्रसाद खाकर लौटे तो इसे पति अवश्य मिलेगा। ऐसी आकाशवाणी सुनकर कलावती ने घर पहुँचकर प्रसाद खाया। फिर आकर पति के दर्शन किए। तत्पश्चात् साधु ने बंधु-बांधवों सहित सत्यदेव का विधिपूर्वक पूजन किया। उस दिन से वह पूर्णिमा को सत्यनारायण का पूजन करने लगा। फिर इस लोक का सुख भोग कर अन्त में स्वर्गलोक को गया।

❋❋❋

पाँचवा अध्याय

सूतजी बोले- हे ऋषियों! मैं और भी कथा कहता हूँ, सुनो- प्रजापालन में लीन तुंगध्वज नाम का राजा था। उसने भी भगवान का प्रसाद त्यागकर बहुत दुःख पाया। एक समय वन में जाकर वन्य पशुओं को मारकर बड़ के पेड़ के नीचे आया। वहाँ उसने ग्वाले को भक्ति-भाव से बांधवों सहित सत्यनारायण जी का पूजन करते देखा। राजा देखकर भी अभिमान वश वहाँ नहीं गया और न ही नमस्कार किया। जब ग्वालों ने भगवान का प्रसाद उसके सामने रखा तो वह प्रसाद त्यागकर अपनी सुंदर नगरी को चला। वहाँ उसने अपना सब कुछ नष्ट पाया तो वह यह जान गया कि यह

सब भगवान ने किया है। तब वह ग्वालों के समीप गया और विधिपूर्वक पूजन कर प्रसाद खाया तो सत्यदेव की कृपा से पहले जैसा था, वैसा ही हो गया। फिर दीर्घकाल तक सुख भोगकर मरने पर स्वर्गलोक को गया। जो मनुष्य इस परम दुर्लभ व्रत को करेगा भगवान की कृपा से उसे धन-धान्य की प्राप्ति होगी। निर्धन धनी और बंदी बंधन से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है। संतानहीनों को संतान प्राप्ति होती है तथा सब मनोरथ पूर्ण होकर अंत में बैकुण्ठ धाम को जाता है। जिन्होंने पहले इस व्रत को किया अब उनके दूसरे जन्म की कथा कहता हूँ। वृद्ध शतानन्द ब्राह्मण ने सुदामा का जन्म लेकर मोक्ष पाया। उल्कामुख नाम का राजा दशरथ होकर बैकुण्ठ को प्राप्त हुआ। साधु नाम के वैश्य ने मोरध्वज बनकर अपने पुत्र को आरे से चीरकर मोक्ष को प्राप्त किया। महाराज तुंगध्वज ने स्वयं-भू होकर भगवान में भक्ति युक्त कर्म कर मोक्ष प्राप्त किया।

॥ इति श्री सत्यनारायण व्रत कथायां सम्पूर्णम्॥

बोलिए सत्यनारायण भगवान की जय!

आरती श्री सत्यनारायण जी की

जय लक्ष्मी रमणा श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा॥ टेक॥
रत्न जटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन घण्टा ध्वनि बाजै॥ जय॥
प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो॥ जय॥
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी॥ जय॥
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीनी॥ जय॥
भाव भक्ति के कारण छिन छिन रूप धारयो।
श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सरयो॥ जय॥
ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी॥ जय॥
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥ जय॥
(सत्य) सत्यनारायणजी की आरति जो कोई गावै।
तन-मन-सुख-सम्पति मनवांछित फल पावे॥ जय॥